PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में दलित संवेदना

Received : January 2019
Accepted : March 2019

Abstract (सारांश) : हिन्दी साहित्य में दलित- साहित्य की सुदीर्घ परंपरा है। मानव को केन्द्रबिन्दु बनाकर बहिष्कृत समाज की वेदना को वाणी प्रदान करने वाले इस साहित्य की मुख्य विधा प्रारंभ में आत्मकथा थी, जो अनुभूत यथार्थ पर आधारित होती है। कालांतर में साहित्य की अन्य विधाओं सहित रेखाचित्र और संस्मरण में भी दलित-वेदना को अभिव्यक्ति मिली। यथार्थ पर आधारित इन विधाओं में कल्पना की जगह सत्य की समग्रता तथा लेखक की अनुभूतियों, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अद्‌भुत संगम होता है।

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वोत्तम संस्मरण लेखिका और रेखाचित्रकार हैं। इनके ग्यारह संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह 'अतीत के चलचित्र' 1941 में प्रकाशित हुआ, जिनमें आठ रेखाचित्र दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1943 में प्रकाशित, द्विवेदी-पदक से सम्मानित 'स्मृति की रेखाएँ' के सात रेखाचित्रों में पाँच दलित वर्ग को समर्पित हैं। अन्य रेखाचित्र भी किसी न किसी रूप में समाज से बहिष्कृत और उपेक्षित चरित्रों के ही प्रतिरूप हैं।

इन संस्मरणात्मक रेखाचित्रों के सभी पात्र दीन, विवश परंतु कर्मठ और रचनाशील हैं। पुरूष-पात्रों में दृढ़ता, उत्साहपूर्ण शक्ति तथा आत्म-गौरव है, तो स्त्री-पात्रों में गरिमामयी बनानेवाली भावनात्मक दुर्बलता। अपने जीवन से जुड़े इन चरित्रों के व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों पर विशेष बल देते हुए महादेवी जी ने अनेक सामाजिक विकृतियों की चर्चा की और इन्हें हर संभव मदद देकर समाज-सुधार की दिशा में सार्थक पहल भी की।

वास्तविक जीवन पर आधारित होने के कारण ये रेखाचित्र जीवन के अनेक रंग तो प्रस्तुत करते ही हैं, महादेवी जी की गहरी संवेदना के प्रतीक भी हैं। इनमें यदि जीवन का स्पंदन और आत्मा का वृहत्कंपन है तो अछूतोद्धार का संदेश भी है। दलित-संवेदना पर आधारित ये रचनाएँ सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् की प्रतिष्ठा करने के साथ-साथ नव-जागरण का शंखनाद भी करती हैं।

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

उद्देश्य :- इस शोध पत्र का उद्देश्य महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित दलितों और उपेक्षितों की दारूण दशा का विश्लेषण करना है।

Key Words (संकेत शब्द): दलित-साहित्य, दलित-संवेदना, सामाजिक विकृतियाँ, सकारात्मक पक्ष, अछूतोद्धार ।

भूमिका:

हिन्दी-साहित्य में दलित-साहित्य की सुदीर्घ परंपरा है। इसका केन्द्र-बिन्दु मानव होता है और बहिष्कृत समाज की वेदना को वाणी देना इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य है। प्रारंभ में दलित-साहित्य की मुख्य विधा आत्मकथा थी, जो भोगे हुए यथार्थ पर आधारित होती है। कालांतर में आलोचनात्मक ग्रंथों, शोधग्रंथों और समीक्षात्मक ग्रंथों में भी दलित-साहित्य की रचना हुई ।

संस्मरण और रेखाचित्र साहित्य की अपेक्षाकृत नई विधाएँ हैं। इनकी बुनियाद भी यथार्थ पर आधारित होती है और कल्पना की जगह सत्य की समग्रता मिलती है। इनमें लेखक की अनुभूतियों, स्मृतियों और जीवन-मूल्यों का अनोखा संगम होता है।

महादेवी जी हिन्दी की सर्वोत्तम संस्मरण लेखिका और रेखाचित्रकार हैं। इनके संस्मरणों में गद्य का शुद्ध रूप, जीवन का स्पंदन और आत्मा का वृहत्कंपन देखा जा सकता है। कुशल चित्रकार होने के कारण वे अच्छे रेखाचित्र लिखने में भी निपुण हैं। वैसे भी रेखाचित्र लिखने की कला चित्रकला से ही प्रेरित है।

यद्यपि महादेवी जी की रचनाओं को 'संस्मरण' या 'रेखाचित्र' समझने में परस्पर विरोध है तथापि इन्हें संस्मरणात्मक

रेखाचित्र कहना अधिक समीचीन है। लेखिका ने भी इन्हें 'संस्मरण कथाएँ' कहा है, इन्हें 'स्मृति की सुरक्षित सीमा' से बाहर लाया गया है और इन संकलनों के लिए 'अतीत के चलचित्र' तथा 'स्मृति की रेखाएँ' शब्दों का प्रयोग किया गया है।

'अतीत के चलचित्र' 1941 ई0 में और 'स्मृति की रेखाएँ' 1943 ई0 में प्रकाशित हुई। इन में संकलित रचनाओं में उन्होंने समाज की विषमता के प्रति आक्रोश व्यक्त किया तथा उपेक्षित, असहाय, घृणित, दयनीय किन्तु कर्मठ और कर्त्तव्यशील जीवन को वाणी दी। शचीरानी गुर्टू के शब्दों में ''लोक सामान्य संवेदनीयता की भावभूमि पर उन्होंने गहरे हल्के रंगों के सम्मिश्रण से जीवन के जो चित्र आँके हैं, वे अर्थपूर्ण अनुभूतियों के आधार पर यथार्थ का सच्चा निरूपण करते हैं। (गुर्टू, 1951:12-13)

उद्देश्य :

सामान्य :-इन संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में जीवन की अनेक मूलभूत और ज्वलंत समस्याएँ उठायी गई हैं और उनके समाधान की दिशा में महादेवी जी ने स्वयं पहल भी की है। ये रचनाएँ वर्ग भेद को मिटाने में सहायक होने के साथ-साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी देती है। इनकी प्रासंगिकता साबित करना इस शोध पत्र का सामान्य उद्देश्य है।

विशिष्ट :

सामंतवादी मानसिकता के परिष्कार द्वारा समाज के दीन-हीन व्यक्तियों का उन्नयन हो सके; यही इस शोध पत्र का विशिष्ट उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धति : इस शोध-पत्र के लिए शोध- प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह के लिए संदर्भ ग्रंथों की मदद ली गई है।

हिन्दी के साहित्यकारों में महादेवी वर्मा की विशिष्ट पहचान है। जीवन, दर्शन, साहित्य, कला आदि के संबंध में विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति महादेवी साहित्य की अन्यतम विशेषता है। इनके गद्य साहित्य में चरित्र-निर्माण और वस्तु विन्यास के द्वारा सशक्त जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। अपनी विशिष्ट प्रकृति के कारण इनका गद्य-साहित्य हिन्दी साहित्य की उल्लेख्य उपलब्धि है। कहीं-कहीं उन्होंने जीवन-मूल्यों के संबंध में प्रत्यक्षत: भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। कवित्व के भावुक क्षणों में वह संवेग से प्रेरित होकर हृदय की अतलवर्त्तीय परिधियों का संस्पर्श करती है तो गद्य लेखन के क्षेत्र में चिंतन में आत्मलीन होकर वैचारिक समस्याओं के अनेक विकल्प, विश्लेषण और विवेचन प्रस्तुत करती हैं। वस्तुत: उनका गद्य साहित्य पद्य की तुलना में अधिक गरिमामय है। इन रचनाओं ने उनकी मूक अनुभूति को एक विचारक सुधारक और चिंतक के रूप में वाणी दी है। कविताओं में उनका जो रूप प्रच्छन्न था वो गद्य में एक विराट व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आया है। उन्होंने विधवाओं, वेश्याओं, अवैध संतानों और दीन-हीन-प्रताड़ित व्यक्तियों की समस्याओं के प्रति न सिर्फ अपनी संवेदना व्यक्त की है, बल्कि अपने क्रांतिकारी दृष्टिकोण का परिचय भी दिया है। अमृत राय के शब्दों में ''महादेवी का गद्य साहित्य मूलत: समाज केन्द्रित है। उसने जनता के पीड़ित जीवन को स्वर दिया है।'' (राय, 1951 : 32)

महादेवी जी ने गद्य कृतियों के अंतर्गत निबंध, रेखाचित्र और संस्मरणों की रचना की है। रेखाचित्र और संस्मरण से संबंधित **उनके चार संग्रह प्रकाशित हुए है:-**

1. अतीत के चलचित्र :- 1941 ई0
2. स्मृति की रेखाएँ :- 1943 ई0
3. पथ के साथी :- 1956 ई0
4. मेरा परिवार :- 1972 ई0

इन संकलनों में चित्रित सभी पात्र महादेवी जी के आत्मीय हैं। 'पथ के साथी' में उन्होंने अपने साहित्यिक सहयात्रियों की जीवन चर्चा के क्रम में उनका बौद्धिक और आत्मिक परिचय दिया है। 'मेरा परिवार' में उनके पालतू पशु-पक्षियों का रेखांकन है। महादेवी जी की दलित संवेदना की अभिव्यक्ति 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में हुई है। इनमें संकलित सभी चित्रों की भीत आँसुओं पर आधारित है, जो पाठकों के हृदय में करूणा का संचार करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

'अतीत के चलचित्र' में ग्यारह रेखाचित्र हैं जिनमें रामा, विधवा मारवाड़ी वधू और बिन्दा संबंधी रेखाचित्र अतीत से और शेष आठ वर्त्तमान से संबंधित हैं।

रामा महादेवी जी का घरेलू सेवक था, जो सूरत से कुरूप अवश्य था; पर उसकी सेवा भावना में कोई कमी नहीं थी। बीमारी के समय वह अपनी सेवा परायणता और सावधानी का जो परिचय देता, वह अन्य लोगों में बहुत कठिनाई से मिलता है।

रामा की जीवन गाथा भी विचित्र है। विमाता के अत्याचारों से तंग आकर घर छोड़ देता है और लेखिका के घर में आश्रय पाता है। बाद में उसका ब्याह हो जाता है और पत्नी भी साथ ही रहने लगती है। नए परिवेश के साथ ताल-मेल नहीं बिठा पाने के कारण वह रूठकर मायके चली गई और रामा जब उसे लाने गया तो बहुत बुलाने पर भी लौट कर नहीं आया, लेकिन लेखिका के लिए ''रामा आज भी सत्य है, सुन्दर है और स्मरणीय है। मेरे अतीत में खड़े रामा की विशाल छाया वर्तमान के साथ बढ़ती ही जाती है- निर्वाक, निस्तंद्र पर स्नेह तरल।'' (वर्मा, 2004 : 23)

दूसरा रेखाचित्र पारिवारिक अत्याचारों से पीड़िता और उपेक्षापूर्ण वातावरण में मूक रहकर घुट-घुट कर जीने वाली बाल विधवा का है। आठ वर्षीया महादेवी उस 19 वर्षीया युवती को भाभी मानती थी। प्रतिबंधित जीवन जीनेवाली उस अबोध युवती ने एक दिन सबकुछ भूल कर महादेवी जी द्वारा लाई हरी चुन्नी माथे पर धारण कर ली और तत्पश्चात् श्वसुर तथा ननद ने उसे जो प्रताड़ना दी, उसने जीवन भर के लए महादेवी जी को रंगीन कपड़ों से विरक्त कर दिया-''आज भी जब कोई रंगीन कपड़ो के प्रति विरक्ति के संबंध में कौतूक भरा प्रश्न कर बैठता है, तो वह अतीत फिर वर्त्तमान होने लगता है। कोई किस प्रकार समझे कि रंगीन कपड़ों में जो मुख धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगता है, वह कितना करूण और कितना मुरझाया हुआ है।'' (वर्मा, 2004:30)

बड़ी होने पर उन्होंने अपनी भाभी की खोज खबर लेनी चाही, परंतु कुछ पता नहीं चला और वे सोचने लगी कि जब वृद्ध ने हमेशा के लिए आँखे मूँद ली होगी तो अपनी विधवा बहू को किसके सहारे छोड़ा होगा ? यह अनूत्तरित प्रश्न उनके मस्तिष्क में मंथन करता रहता है। यह चित्र हिन्दू समाज द्वारा विधवाओं के प्रति अत्याचार की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति है।

तीसरा मार्मिक चित्र उस निरीह तथा अबोध बालिका बिन्दा का है, जिसकी अवस्था पिंजड़े में बंद चिड़िया की तरह है और जो विमाता के अत्याचारो तथा दुर्व्यवहार की शिकार होकर सदा के लिए मुक्ति पा जाती है।

चौथा चित्र सबिया का है, जो निम्नवर्ग की प्रतिनिधि है और पीड़ित अशिक्षित होते हुए भी त्याग की साक्षात् मूर्ति है। वह पति की निरंतर निष्ठुरता को सहन करती हुई सदा उसकी सेवा के लिए तत्पर रहती थी।

अगले रेखाचित्र में बाल विधवा बिट्टो की करूण गाथा का जीवंत चित्रण है। तीन भाइयों की यह इकलौती बहन अत्यंत लाड़-प्यार में पली थी। विधवा होने के बाद भाभियों ने विधवा विवाह के नाम पर उसे एक 54 वर्षीय वृद्ध से ब्याह दिया था। वृद्ध के महाप्रयाण के बाद अभिशाप की मूर्ति बनी वह संसार के ज्वालामुखी में राख बन जाने के लिए बच जाती है।

छठाचित्र अठारह वर्षीया विधवा लड़की का है, जो ग्यारह वर्ष की उम्र में विधवा होकर एक अवांछित बच्चे की माँ बनने वाली होती है। इस रेखचित्र में उसके अभिशप्त जीवन की करूणामयी झाँकी प्रस्तुत की गई है।

सातवाँ चित्र कर्त्तव्यपरायण और आज्ञापालक घीसा का है। यह समाज द्वारा उपेक्षित, संकोची तथा विनम्र कोरी बालक और लेखिका के मध्य ममता के अटूट बंधन की कहानी है।

आठवाँ चित्र वेश्यापुत्री का है, जो पति की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान के लिए हर मुसीबत को झेलती है। इस रेखाचित्र में लेखिका ने इस निस्सारता का चित्रण किया है कि अभिजात्य कुल में उत्पन्न पतिता को भी कुलीनता का प्रमाण पत्र प्राप्त रहता है जबकि वेश्या की सती पुत्री भी घृणा के योग्य मानी जाती है।

नवाँ चित्र पुरूषार्थी और परिश्रमी किंतु अंधे अलोपी का है, जो दरिद्र होते हुए भी स्वभाव से अत्यंत उदार था। फेरी में सब्जी बेचने वाला यह स्वाभिमानी युवक अपनी ही पत्नी के विश्वासघात का क्रूर शिकार बन जाता है ओर अंततः सदा के लिए संसार त्याग देता है।

दसवाँ चित्र गरीबी से अभिशप्त बदलू कुम्हार और उसकी सच्ची अर्द्धांगिनी रधिया का है। रधिया की मृत्यु के बाद गँवार बदलू अपने लगन, मेहनत तथा समर्पण से एक उम्दा कलाकार बन जाता है।

अंतिम चित्र लछमा नामक एक पहाड़ी युवती का है, जो बेमेल विवाह का अभिशाप और परिवार वालो की क्रूरता झेलकर भी खुलकर हँसना जानती है। निडर, निश्छल, कर्मठ तथा अत्यंत ममतामयी लछमा पर अंधे बाप, अपाहिज माँ तथा परलोक वासिनी भाभी और विरक्त भाई के दो बच्चों के भरण-पोषण की

जिम्मेदारी है। मंदबुद्धि भाई की बुद्धिमति और परिश्रमी पत्नी लछमा देवर और जेठों की आँख की किरकिरी थी। ससुरालवालों ने जान से मारने की कोशिश की लेकिन वह बच गई और फिर बुलाने पर भी ससुराल वापस नहीं गयी।

यथार्थ की ठोस भूमि पर आधारित इन रेखाचित्रों में टीस भी है और मिठास भी है। निर्दयी और स्वार्थी समाज में घुट-घुट कर जीने वालों की मूक गाथा के प्रति पाठकों को गहरी संवेदना हो जाती है -''करूणा और सहानुभूति की नींव पर आधारित इन रचनाओं में महादेवी जी के सूक्ष्म अंतर्भाव ऊपरी सतह पर उठनेवाली लहरियों की भाँति नहीं, वरन् अंतस के गहन गंभीर आलोड़न से उत्पन्न तीखे ठोस बिन्दु हैं, जो मर्म पर चोट करते हुए अमिट रूप से अंकित हो जाते हैं मानो भीतर की सारी शक्ति संचित होकर शब्दों में सजीव हो उठती है।'' (गुर्टू, 1951 : 11)

अपनी स्मृति की सुरक्षित सीमा से इन्हें बाहर लाकर महादेवी जी ने न्याय ही किया है। वस्तुत: अपनी विराट सहानुभूति से उन्होंनें तुच्छ को अमर कर दिया।

'स्मृति की रेखाएँ' में चित्रित सभी सात चित्र लेखिका के जीवन के अभिन्न अंग हैं। पहला रेखाचित्र महादेवी जी की सेविका भक्तिन का है, जिसमें उसके दृढ़ चरित्र के साथ समाज के विकृत स्वरूप का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया गया है।

दूसरा चित्र चीनी फेरीवाले का है जिसमें बहन का स्नेह, विमाता के अत्याचार, वेश्यावृत्ति और जीवन संघर्ष के अनुभव उभर कर सामने आए है। बनारसी दास चतुर्वेदी ने इसे हिन्दी साहित्य का चिरस्मरणीय रेखाचित्र बताया है।

दरिद्र होते हुए भी मानवता के मस्तक पर रोली-चंदन के टीके के समान सुशोभित सहज स्नेह-सूत्र में बँधे दो कुली भाइयों धनिया और जंगिया की मार्मिक कथा तीसरे रेखा चित्र में है।

चौथा रेखाचित्र निठल्ले पति से बँधी मधुर भाषिणी और सेवापरायण मुन्नू की माँ तथा तीव्र बुद्धि वाले उसके पुत्र का है, जो उचित मार्ग दर्शन के अभाव में अपनी बुद्धि बुरे कामों में लगाता है।

पाँचवा चित्र ठकुरी बाबा नामक बयोवृद्ध भाट कवि का है, जिनमें उदारता, सहजता, सरलता तथा भावुकता जैसे स्वाभाविक गुण थे।

छठा चित्र बिबिया का है, जो विद्रोह की कभी राख न होनेवाली ज्वालामुखी थी। जीवन भर वह चरित्रहीनता का कलंक ढोती रही लेकिन अंत में आत्महत्या कर लेती है।

सातवें रेखचित्र में नारीत्व का चरमरूप मिलता है। इसमें गूँगिया नामक एक गूँगी नारी के वात्सल्य और स्नेह का मार्मिक वर्णन किया गया है।

ग्रामीण लोक जीवन के जितने सहज चित्र इसमें मिलते हैं, वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। इन पात्रों के माध्यम से लेखिका के हृदय में व्याप्त ममता, निश्छलता जैसे गुण तो मुखर हुए ही है, समाज के प्रति तीखा व्यंग्य और आक्रोश भी व्यक्त हुआ है।

महादेवी जी के रेखाचित्रों के उपर्युक्त सभी पात्र ऐतिहासिक पुरूष, क्रांतिकारी या महापुरूष नहीं है वरन् भारतीय समाज के प्रताड़ित, शोषित, अशिक्षित, दीन-हीन पर भोले भाले और सरल मानव हैं। जिस प्रकार कैमरामैन को चित्र प्रस्तुत करने के लिए व्यक्ति तथा पृष्ठभूमि चाहिए, उसी प्रकार महादेवी जी की ये कृतियाँ करूणा और सहानुभूति की नींव पर आधारित हैं। उन्हीं के शब्दों में- ''इन संस्मरणों के आधार प्रदर्शनी की वस्तु न होकर मेरी अक्षय ममता के पात्र रहे हैं।'' (वर्मा, 2004 : 09)

निष्कर्ष:

ये संस्मरणात्मक रेखाचित्र अनेक दृष्टियों से विशिष्ट हैं। इन चरित्रों की अतल गहराई में प्रविष्ट होकर महादेवी जी ने मानवीय भावनाओं के मोती चुने हैं। उन्होंने जिन उपेक्षित चरित्रों को अपनाया वे भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याओं में जकड़े हुए थे। इस दृष्टि से समाज के प्रति लेखिका का जागरूक दृष्टिकोण व्यक्त होना स्वाभाविक ही है। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था और परंपरागत संस्कारों पर कहीं-कहीं इतना दारूण आघात किया है कि पाठक तिलमिला उठता है- ''सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आँकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्नवर्ग के निरीह, साधनहीन प्रणियों का ऐसा हार्दिक और अनूठा चित्रण अन्यत्र कम ही मिलेगा।'' (गुर्टू, 1951 : 11)

महादेवी जी घृणा से अधिक ममता और सहानुभूति में विश्वास रखती हैं। संभवत: यही कारण है कि उनकी आक्रोश की आग पर करूणा और सहानुभूति का हिम आच्छादित है। लेकिन

कहीं-कहीं उनका विद्रोह और उनकी व्याकुलता स्पष्ट है। विशेषत: नारी के प्रति होने वाले अत्याचार के क्रम में। इस प्रकार सामाजिक चेतना से ओत प्रोत इन रचनाओं में विद्रोह का स्वर भी है। इसी संदर्भ में वे कहती हैं-''युगों से पुरूष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।'' (वर्मा, 2004 : 56)

इसी प्रकार समाज में मानवता के अभाव तथा पशु तुल्य जीवन की एक झलक इस पंक्ति में द्रष्टब्य है - ''वे बेचारे मनुष्य-पशु हाँफ-हाँफ कर मुँह से फिचकुर निकालते हुए दौड़ते हैं।'' (वर्मा, 2003 : 35)

महादेवी जी ने अतीत की बिखरी हुई स्मृतियों को संवेदना के कोमल धागे में पिरोया है। उनका स्नेह भूखे, नंगे, निराश्रय बालकों के प्रति उमड़ पड़ा तो कोमल हृदय पीड़ित, उपेक्षित, पुरूषों द्वारा रौंदी और सामाजिक बंधनों में जकड़ी नारियों की आशा-निराशा, हास्य रूदन और अंतर्बाह्य ऊहापोहों से द्रवित हो उठा। तभी तो वे कहीं माँ के रूप में, कहीं बहन के रूप में तो कहीं स्वामिनी के रूप में अन्यतम हैं। भक्तिन और उनके बीच का सेवक स्वामी संबंध अपूर्व है। ऐसा सेवक जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। साथ ही उन्होनें अपना परिचारक, अपना ग्वाला, धोबी और ताँगे वाला कभी नहीं बदला।

उनका घर मुन्नू की माँ का एकमात्र नैहर है। जन्म का दुखियारा, मातृ-पितृहीन और बहिन से बिछड़ा हुआ चीनी उनका भाई है। विश्वंभर 'मानव' के अनुसार, ''महादेवी जी ने-- तुच्छ से तुच्छ वस्तु और समाज में छोटे की संज्ञा पाने वाले अनादृत व्यक्तियों के सुख-दुख में अहर्निश जीवंत भाग लेकर अपने को भुला दिया है। वे केवल उन व्यक्तियों में से नहीं हैं, जो कल्पना से भारतीय हाहाकार को चित्रित कर क्रांति या प्रगति के अग्रदूत कहलाते हैं, वरन् उन सच्ची आत्माओं में से हैं जो शीत-घाम-वर्षा में -- अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए, अपने ही हाथों से वास्तविक दीनों और व्यथितों की सेवा करती फिरती हैं।'' (मानव, 1951:91)

जाति-पाँति या वर्ग-समाज के भेदभाव से रहित इन रेखाचित्रों में सर्वत्र उनकी करूणा का प्रसार है। पुनर्विवाह, विधवा-विवाह, वेश्यावृत्ति, विमाता के अत्याचार, परस्त्रीगमन, अशिक्षा, बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याओं के प्रसंगानुसार चित्रण के कारण ये रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। हर चरित्र अपने वर्ग का प्रतिनिधि है। फिर भी अलग-अलग व्यक्तित्व रखता हैं। इन दीन-हीन चरित्रों में एक उल्लेखनीय चरित्र मुन्नू की माँ भी है, जो अपने कर्त्तव्य पालन के लिए ब्राह्मणी होकर भी मजदूरी करती है किन्तु उत्तरदायित्वों से मुख नहीं मोड़ती। अन्य सभी पात्र भी आँसुओं और आहों की साक्षात् प्रतिभूर्ति हैं। पुरूष पात्रों में उत्साहपूर्ण शक्ति तथा आत्म-गौरव है तो स्त्री-पात्रों में भावनात्मक दुर्बलता।

आत्मकथात्मक शैली में लिखे इन रेखाचित्रों का हर चरित्र उन्हें अपना समझता है। वे भी सबका दु:ख बाँटने के लिए न सिर्फ सदैव तत्पर रहती हैं बल्कि यथासंभव समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। ये रेखाचित्र जीवन के अनेक रंग तो प्रस्तुत करते ही हैं, महादेवी जी की गहरी संवेदना के प्रतीक भी हैं।

दलित संवेदना पर आधारित ये रचनाएँ अछूतोद्धार का संदेश तो देती ही हैं, सत्यम् शिवम् और सुंदरम की प्रतिष्ठा करने के साथ-साथ नव जागरण का शंखनाद भी करती है ।

इस संदर्भ में गोपाल कृष्ण कौल का कथन सर्वथा उपयुक्त है- ''उनके रेखाचित्रों के पात्र ऐतिहासिक महापुरूष नहीं, बल्कि भारतीय जन-जीवन के वे कुरूप चिह्न हैं जो कुछ तो अशिक्षा और शोषण से दीन और सरल बन गए हैं, और कुछ महादेवी की ममता और करूणापूर्ण सहानुभूति से। दलित और पिछड़ा हुआ मानकर जिन व्यक्तियों की हम उपेक्षा कर देते हैं, महादेवी ने अपनी विराट सहानुभूति के सहारे उनका अंतरंग अध्ययन कर इन रेखाचित्रों में प्रस्तुत किया है।'' (कौल, 1951 : 191)

संदर्भ:

कौल, गोपालकृष्ण. (1951). ''महादेवी के रेखाचित्र'', महादेवी वर्मा : काव्य-कला और जीवन दर्शन, सं0 गुर्टू, शचीरानी. दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स.

सं0 गुर्टू, शचीरानी. (1951). महादेवी वर्मा : काव्य-कला और जीवन दर्शन, दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स.

मानव, विश्वंभर. (1951). ''महादेवी की प्रणयानुभूति'', महादेवी वर्मा : काव्य-कला और जीवन दर्शन, सं0 गुर्टू, शचीरानी, दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स.

राय, अमृत, ''गद्यकार महादेवी और नारी समस्या'', महादेवी वर्मा : काव्य कला और जीवन दर्शन, सं0 गुर्टू, शचीरानी, दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स.

वर्मा, महादेवी. (2004). अतीत के चलचित्र, इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन.

वर्मा, महादेवी. (2003). स्मृति की रेखाएँ, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन.